हमर-धरम-करम...

हमर लोक-जीवन म परसा रुखुआ अउ सोहाई



छत्तीसगढ़ के जन-जीवन हर कृषि संस्कृति अउ प्रकृति संस्कृति पर आधारित हे। तभे तो इहाँ के जम्मो सुख-दुख तीज-तिहार,नेंग-बड़ाई, धर्म- कर्म, पूजा-पाठ के कारज म एकर प्रभाव हर दिख जाथे।जइसे कि मै उपर म बताय हँव कि हमर जीवन हर कृषि संस्कृति अउ प्रकृति संस्कृति पर आधारित हेात आवत जानथन सबले पहिली कृषि संस्कृतिल-हमर छत्तीसगढ़ राज के बात करे जाय त इहाँ शत- प्रतिशत कृषि कार्य अथवा खेती-किसानी-बखरी- बारी के कारज होथे।इही हर इहाँ के जीवन आधार आय।

इहाँ के जन-जीवन हर इही कृषि के कारज म निर्भर रहिथे।कृषि के जब बात करथन त एमा कोन-कोन फसल आथे जेला हमन कृषि के प्रमुख कारज कहिथन।छत्तीसगढ़ के कृषि संस्कृति हर मुख्य रूप से धान पर आधारित हे जिहाँ ल इहाँ के किसान भाई मन पूरा-पूरा छह महीना तीन-तीन महीना के अंतराल म अर्थात खरीफ फसल अउ रवि फसल के रूप म लेथें।जेकर फसल हर धान ही होथे।जे हर हमर छत्तीसगढ़ीहा मन के लिए धन कहलाथे।इहाँ धान के अतक ज्यादा पैदावार होथे कि जे कर कोई ठिकाना नई रहेातभे तो ए छत्तीसगढ़ ल धान के कटोरा कहे जाथे।एकर अलावा इहाँ मक्का,कोदो, कुटकी,अरहर,कुल्थी मूंगफल्ली,सोयाबीन,दलहन, तिलहन अउ फल भी उगाए जाथे। संगे-संग बखरी म साग-भाजी भी उगाए जाथे।जे हर इहाँ के कृषि संस्कृति के विशेष पहिचान होथे।

छत्तीसगढ़ म बागवानी भी अब्बड़ करे जाथे जेमा फल फूल होथे जइसे कि रंग बिरंग फुल अउ फल म आम,जाम,जामुन,नीबू,आंवला, सीताफल,बोईर के सुग्घर फलदार पेड़ होथे।जेकर हरा-भरा बागवानी अउ मीठ-मीठ रसीला फल मन ह अपन कती आकर्षित करथे।

कृषि क्षेत्र का महत्व–छत्तीसगढ़ के लगभग आधा भूमि ले जादा कृषि योग्य हावय अउ अधिकांश किसान मन छोटे अउ बड़े किसान हावय।इही कृषि कारज हर हमर छत्तीसगढ़ के पहिचान आय।एकर बिना छत्तीसगढ़ के कोई अस्तित्व नईए।कावर कि इहि कारज हर रोजी-रोटी अउ जीवन के आधार आय।

छत्तीसगढ़ म रुखुवा मन के महत्व–हमर छत्तीसगढ़ म रुखुवा मन के भी अब्बड़ महत्व हावय।एकर बिना लोक जीवन के कोनो कारज हर पुरा नई होवय।चाहे सुख के कारज हो चाहे दुख के कारज हो।रुखुआ के आवश्यकता हो ही जाथे।

वइसे मानव जीवन के कोनो क्षेत्र ल ले लिया जाय सबो क्षेत्र म एकर विशेष आवश्यकता होथे।

चाहे सामाजिक हो, चाहे धार्मिक हो, चाहे सांस्कृतिक हो,या फेर चाहे पारम्परिक हो।सबो क्षेत्र म ए रुखुआ मन के विशेष महत्व होथे।

जइसे कि-बर,पीपर,नीम,आमा,अमली,
डुमर,महुआ,परसा,जामुन आदि-आदि।

ए जम्मो रुखुआ मन के हमर लोक जीवन म अब्बड़ कारज होथे।जइसे कि पूजा-पाठ म बर पीपर आमा के लकरी, बर-बिहाव म महुआ,डुमर के डारा, सहित पारम्परिक जिनिस बनाय के रूप म,अउ फेर चूल्हा जलाय के रूप म।इही प्रकार से आथे परसा रुखुआ जेकर हमर छत्तीसगढ़ के लोक जीवन म अब्बड़ महत्व हे।

आवा जानथन एकर महत्व ल–

1.बारह मासी एकर पान से अंगराकर रोटी बनाय जाथे। ए कर पान से ही सुग्घर रोटी बनथे।

2. ए कर केवर-केवर डारा-पाना के सुग्घर झिंपारी बनथे जेला बनाके हमर गाँव देहत म पख्री कुरिया,अंगना,मोहाटी ल तोपे अउ छाय जाथे। जेकर से पानी के छिंचार ल रोके जाथे।

3. देवारी तिहार के बेरा म देवउठनी के दिन ए कर अब्बड़ महत्व हेाए कर बिना हमर पहाटिया मन के नेंग बड़इई अउ ओमन के विशेष कारज हर होथे।

इही परसा रुखुआ के जरी ल कोड़ के लाय जाथे,जेला ओमन बांक कहिथें। ए कर से ही ओमन के साल भर के देव उठनी तिहार अउ राउत नाचा हर पुरा हो पाथे। ए बांक से ही ए मन डेरी बनाथें। जब ए हर बन जाथे तहां ले ओला सुग्घर रंग म रंगे जाथे।

अउ फेर सुग्घर-सुग्घर गाय गरु मन के लिए माला अर्थात मंजूर पाँखी अउ रंग बिरंगी जुन्हा संग सोहाई बनाथें।जेहर ओमन के रखा करथे।

ए सोहाई बांधे के परम्परा हर सदियों से चलत आत हे जेला यदुवंशी अर्थात राउत जाति के गाय चरईया मन करत आत हेइही तिहार हर ओमन प्रमुख तिहार होथे।

देवउठनी के रथिया म ए राउत मन अपन देवता मन ल सुमरनी करथें –

'सदा भवानी दाहिनी, सन्मुख रहे गनेस हो।
पांच देव मिल रक्छा करंय,बरम्हा,बिसनु,महेस।। होह्याह्याह्या।

अपन किसान घर बाजा-गाजा के साथ सुग्घर पारम्परिक वेष भूषा म जाथें जेकर गाय-गरु ल ओमन साल भर चरायें।

अउ सबले पहिली अपन किसान के अंगना म जाथें अउ फेर दोहा पारत अपन किसान ल आय के आरो देथें।कुछ एक बेरा म सुग्घर दोहा पार-पार के नाचे के बाद ओ पाहटिया हर गाय-गरु मन ल सोहाई पहनथें।फेर किसान के कोठी ढाबा म जाके अशीत देवत फेर दोहा बोलथें-

'धन गोदानी भुईया पावा, पावा हमर असीस।
नाती-पूत ले घर भर जावे, जीवा लाख आशिषे ।
अउ फेर गोबर के थाप देथें।इही हर असित होथे।

एकर बाद फेर किसान हर ओमन ल जसना बनथे ओसने रूपया-पईसा कपड़ा लत्ता भेंट करथे।

'अरे जईसनहा मालिक लिए दिए रे भैया
अईसे के दे आशीष
अनधन तो घर भरे रे भैया
जुग जुग लाख बरीसे।। '

'आवत देबो राम रमईया,अउ जावत देबो आशीषे
दुधे खाईहौ पुते फलीहौ,जिहौ लाख बरिसे।।

अउ फेर ए प्रकार से आशीत पाहटिया म अपन मालिक के घर ले बिदा हो जाथेंए हर आय हमर छत्तीसगढ़ के लोक परम्परा अउ संस्कृति जिहां नाना प्रकार के सुग्घर झाँकी देखे ल मिल जाथे।

जिहां के परम्परा हर कृषि संस्कृति पर आधारित हे,ए कृषि संस्कृति म खेती-किसान,बखरी-बारी से लेकर खेत-खलिहान,बाग़-बगीचा अउ रुखराई मनके हरयाली के सुग्घर मनमोहक दृश्य दिखाई देथे। जेकर मन के हमर सामाजिक,धार्मिक अउ सांस्कृतिक जीवन म अब्बड़ महत्व होथे।जेकर लोक-संस्कृति म दया-मया प्रीत के,सद्भावना के,एकता के,भाईचारा के स्वरूप हर झलक जाथे।



अशोक पटेल 'आशु'
तुस्मा,शिवाशीनारायण (छ ग)
9827874578

वैसे तो रविवार देर से उठने का दिन होता है पर हॉस्पिटल जाना था तो जल्दी उठना पड़ा। वहाँ से लौटते ही माँ ने चाय के साथ नाश्ता करने के लिए कुछ विकल्प बताए तो कुछ खाने लग गया। नाश्ता करते-करते भाई पाँच रुपए की मूँग-दाल वाली नमकीन का छोटा पैकेट मेरे पास रख गया। मैं पूछ भी नहीं पाया कि कहाँ से आया है पर वो प्रभात-फेरी से लौटा था और शायद वहाँ से प्रसाद के रूप में मिला था।

मूँग-दाल वाली नमकीन



मूँग-दाल नमकीन वाले छोटे पैकेट से मेरा बीरबल की खिचड़ी वाले प्रसंग जैसा रिश्ता है और काफी दिनों या महीनों बाद आज उसे देखते ही मन पुरानी यादों की झील में गोते लगाने लगा। बात तब की है जब मुझे एक दिन फोन पर मैसेज मिला कि आपको बोर्ड परीक्षा की कॉपी चेक करने हेतु एक ऑफिस में सेंटर पर बुलाया गया है। मैं काम की मेहनत से घबराने वाला व्यक्ति नहीं हूँ पर ये पहला अनुभव होने के कारण थोड़ी दुविधा होना स्वाभाविक था।

दूसरा डर ये था कि कोई गलती न हो जाए क्योंकि परीक्षक बनना जिम्मेदारी का काम होता है। आजकल किसी विद्यार्थी को संशय है कि अंक कम मिलें हैं तो कॉपी देखने का भी विस्टम है। लेकिन इन सबसे अलग और बड़ी मेरी निजी समस्या ये थी कि पीठ में दर्द होने के कारण एक जगह कई घण्टे बैठना मेरे लिए दुखदायी रहने वाला था। खैर, जाना तो था ही, बीमारी के कारण ड्यूटी निरस्त करवाने हेतु किसी से मदद लेना मेरे बस की बात नहीं थी।

मैं घर ही घर में रहने वाला जीव हूँ और असामाजिक होने का ये नुकसान होता है कि आपका ज्यादा लोगों से परिचय नहीं हो पाता। मेरी बदकिस्मती के भी पुराने अनुभव हैं कि कभी किसी से कुछ सहायता माँगी या निवेदन किया तो अधिक बार निराशा ही हाथ लगी है इसलिए मैं कोशिश यही करता हूँ कि किसी से कोई मदद न लूँ। पहले दिन वहाँ जाने के बाद शाम को प्रिंसिपल साहब ने जरूर कहा कि मुझसे कहते तो हम वहाँ जाकर बात कर आते कि इसकी शारीरिक समस्या है और ड्यूटी निरस्त करवाने की कोशिश करते और उनकी सद्भावना सुनकर मुझे अच्छा भी लगा था लेकिन प्रिंसिपल साहब सख्त और अनुशासनप्रिय व्यक्ति थे इसलिए उनसे मुझे कुछ कहते झिझक होती थी।

जैसे-तैसे हिम्मत जुटाकर और एक दर्द की गोली खाकर मैं ड्यूटी करने पहुँच गया। एक बड़े क्षेत्र में फैले और सैकड़ों कमरों और दर्जनों इमारतों वाले कार्यालय में परीक्षक-केंद्र को मैंने निश्चित समय पर ही ढूँढ लिया। कुछ साल पहले एक बार कोई विभागीय ट्रेनिंग कार्यक्रम था और वहाँ देर से आने वाले एक कर्मचारी को एक बड़े अफसर ने बेंच पर खड़ा रहने की सजा दे दी तब से हर जगह टाइम पर पहुँच जाना ही मैंने अपनी आदत बना ली थी।

एक बड़े हॉल के अंतिम छोर पर एक कमरेनुमा केबिन था। अभी अधिक परीक्षक आए नहीं थे। हॉल में सैकड़ों टेबल-कुर्सी लगे हुए थे और हर टेबल के पास एक भरी हुई बोरी सी रखी थी। केबिन में जाते ही मैंने इंचार्ज को बताया कि मेरी ड्यूटी है तो उन्होंने मेरी चाल देखकर मेरे दर्द को समझकर बैठने को कहा।

मैंने झिझकते हुए कहा, चेक करने के लिए क्या मैं घर पर कॉपी ले जाऊँ क्योंकि ज्यादा देर बैठने में समस्या है और घर पर मेरे पास गद्दे वाली कुर्सी है। इंचार्ज साहब चतुर व्यक्ति थे, मुझे मानसिक सांत्वना देते हुए बोले कि सिर्फ गद्दे वाली कुर्सी की ही तो बात है, मैं व्यवस्था कर दूँगा या मेरी ले लेना और रजिस्टर में साइन करवाकर मुझे एक दो लिफाफे दे दिए और वहाँ ढेर में से एक बोरी को आगे से मुड़ी हुई एक कॉटी से खींचते हुए हॉल में एक खाली कुर्सी-टेबल के पास जाकर मुझे छोड़ आए।

प्लास्टिक की धँसी हुई कुर्सी पर मैं बैठ गया और मुझे भगवान का नाम याद आने लगा। थोड़ी देर में एक सर जो कि काफी गंभीर दिव्यांग थे, मेरे पास आकर बैठ गए। उन्होंने अपने बोरी के हल्के से बाँधे हुए मुँह को खोला और कॉपी के एक बंडल को निकाला और लगभग मुझे इग्नोर करते हुए कॉपियाँ चेक करने लग गए। इधर मुझे समझ नहीं आ रहा था कि शुरू कहाँ से करना है और डर भी लग रहा था कि कोई गलती न हो जाए। मैंने उन सर से हल्की आवाज करते हुए पूछा कि सर ये बोरी को खोल लूँ क्या?

उन्होंने कहाँ हाँ, कटर अंदर केबिन से ले आओ। बोरी का मुँह बड़े अच्छे से जूट की रस्सी से सिला हुआ था और मेरी शहरी जीवनशैली में मैंने ऐसा कुछ छुआ भी हो, ऐसा तर्जुबा नहीं हुआ था। धारहित कटर से बोरी के मुँह की सिलाई जैसे-तैसे काटी तो देखा अंदर चार बंडल थे जो कि जूट के कपड़े से बने अलग-अलग थैले में थे और पैकिंग के रूप में सिले हुए थे और जगह-जगह लाख भी चिपकी हुई थी।

मैंने फिर उन्हीं सर से सलाह ली और चारों मोटे बंडलों को खोलने लगा। नौसिखिया होने के कारण और थोड़ी जल्दीबाजी में जूट वाले पैकिंग कपड़े के थैलों को काटने में धूल उड़ने लगी और चारों तरफ फैल गई। जो पास में बैठे सर थे वो अपनी पेंट और शर्ट पर बिखरी धूल को झाड़ने लगे। मुझे लगा कि ये डाँट देंगे कि ये क्या धूल उड़ा रहे हो पर उन्होंने रिएक्ट नहीं किया।

अब बोरी खाली थी और टेबल पर चार पैकेट थे जो कि फिर जूट वाली डोरी से बँधे थे पर अब कॉपियाँ सामने दिख रही थी और हर कॉपी मोटी लग रही थी और हर बंडल में सौ के आसपास कॉपी थी। अब ग्यारह बजे के लगभग हो चुके थे और हॉल काफी हद तक भर सा गया था। हर कुर्सी के पास एक बड़ा टेबल था और एक छोटा टेबल। छोटे टेबल पर कॉपियों का खुला बंडल रखकर लोग बड़े टेबल पर एक-एक करके कॉपी चेक कर रहे थे। कोई भी बोरी के मुँह की सिलाई को नहीं काट रहा था क्योंकि किसी को दो दिन, किसी को और किसी को पाँच दिन, किसी को और अधिक दिन हो चुके थे।

सारे टेबल एक दूसरे से छुए हुए से थे और किसी-किसी दो टेबलों के बीच में एकाध फुट दूरी थी। इंचार्ज साहब या उनके सहकर्मी थोड़ी-थोड़ी देर में केबिन से बाहर आते और जोर से बोलकर सबको नए-नए निर्देश देते, जैसे कि कॉपी चेक करने के सिर्फ दस दिन है, ज्यादा से ज्यादा ग्यारह, उससे ज्यादा की हम डीएल (यहाँ काम करने का कागजी सबूत मान लो) नहीं देंगे।

उनकी बात सुनते ही कॉपी चेक करने वाले परीक्षकों की पेन और जोर से चलने लगती। अब मेरे दोनों ओर दो सर थे और उसके अलावा पीछे वाली पंक्ति में, फिर आगे बहुत सारी कतारें। मैंने फिर उन्हीं सर से पूछा कि अब क्या करना है? वो समझ चुके थे कि मैं पहली बार आया हूँ। उन्होंने समझाते हुए कहा कि कॉपियों को गिनों और लिफाफे में जो फॉर्म आदि हैं उनमें अनुपस्थित विद्यार्थी का रोल नंबर देखो और अनुपस्थित वाले विद्यार्थियों का कॉपियों से मिलान करो।

वो बात करते-करते इधर-उधर नहीं देखते थे और ध्यान कॉपी में रहता था। वो सर हर कॉपी पाँच मिनट से भी कम समय में चेक कर लेते थे। मैंने उनके निर्देशों के हिसाब से कॉपी गिन ली और बाकी औपचारिकता पूरी कर ली। तीन बंडलों को फिर से फटे हुए जूट के थैलों में डालने लगा तो वो सर बोले कि अब इन फटे हुए थैलों में बंडल डालने की जरूरत नहीं। मैंने इधर-उधर गिरी हुई जूट की रस्सी ली और तीन बंडलों को अलग-अलग बाँध लिया और फिर बोरी में डाल लिया।

जूट की रस्सी खोलना भी मशक्कत थी और बाँधना भी सिरदर्दी थी। मैंने एक खुले बंडल को छोटे टेबल पर रखा और पहली-पहली कॉपी चेक करने के लिए श्री गणेश किया। ऑनलाइन दुनिया में एक अच्छे और मददगार स्वभाव वाले समझदार मित्र है अभिनव सर।

मैं यहाँ आने से पहले, रात को उनसे सबकुछ पता कर लिया था कि बोर्ड कॉपी चेक करने के क्या-क्या नियम हैं। कई साल तक अध्यापन करने के कारण पेपर के सारे प्रश्नों के उत्तर याद ही थे पर बहुविकल्पी प्रश्नों के उत्तर बार-बार अलग से दी हुई उत्तरमाला में देखने पड़ते क्योंकि विद्यार्थियों ने मात्र स, अ, ब, द आदि लिखा था। बोर्ड कॉपियों में केजिग भी करनी होती है अर्थात हर उत्तर के अंक को कॉपी के पहले पन्ने पर बने डिब्बों में भरना पड़ता है जिससे कॉपी चेक करने का समय बढ़ जाता है।

जब मेरी पहली कॉपी चेक हुई थी तो दोपहर के बारह बजे थे। मैंने हिसाब लगाया कि दस दिन में लगभग चार घंटे छह के आसपास कॉपी चेक करनी होगी और मेरी भी तक एक कॉपी चेक हुई है। जिधर देखूँ उधर पेन चल रही थी और मेरा जी घबरा रहा था। तभी एक उन्नीस-बीस साल का लड़का सा जग लेकर हॉल में सबको चाय देता नजर आया।

मैंने सोचा कि हॉल में शायद सौ से दो सौ लोग होंगे, मेरे पास चाय आने तक एकाध और कॉपी चेक कर लेता हूँ। चाय शानदार थी। चाय पीते ही थोड़ी एनर्जी और थोड़ा रिलेक्स लगा। अब एक के बाद एक कॉपी चेक करता गया। जिस हिसाब और स्पीड की दैनिक जरूरत थी वो स्पीड अभी नहीं थी और कुछ और भी समस्याएँ महसूस हो रही थी।

एक तो प्लास्टिक कुर्सी अंदर धँसी हुई थी। मुझे प्लास्टिक कुर्सी पर बैठने की आदत नहीं थी और ज्यादा देर बैठने की भी क्षमता नहीं थी। कुर्सी की ऊँचाई और बड़े टेबल की ऊँचाई में अंतर था और कई लोग तो कुर्सी में कुर्सी डालकर बैठे थे ताकि थोड़ा ऊँचा हो सकें लेकिन यहाँ की व्यवस्था करने वाले आकर उनसे बहस करके अतिरिक्त कुर्सी निकलवा लेते। पंखे की हवा के कारण छोटे टेबल पर कॉपी के पन्ने फड़फड़ाते तो ये चीज अखरती।

घंटा दो घंटा काम किया तो पीठ दुखने लगी पर काम रोकने का समय नहीं था। अफसोस हुआ कि दर्द की अतिरिक्त गोली क्यों नहीं लाया। हॉल में शांति भी कम ही रहती थी क्योंकि कटर और बोरा सिलने का सुआ, जूट की रस्सी का गट्ठा आदि एक ही इकाई थी और जो कोई ले जाता तो दूसरा व्यक्ति हॉल में चिल्लाकर पूछता कि किसके पास है। थोड़े समय के बाद केबिन में साइन करने के लिए बुलाया जाता या कुछ और निर्देश दिए जाते तो कोई सर या मैडम आकर जोर से घोषणा करते ताकि पूरे हॉल में आवाज पहुँच सके।

तीन बजे के आसपास सिर बहुत भारी हो गया, हाथ दर्द करने लगा और पीठ भी अकड़ सी गई। ऐसा लगा कि शरीर, शरीर नहीं कोई बारूद का ढेर है जो फटने वाला है। तभी दुबारा वही चाय वाला दूर नजर आया। दुख हुआ कि मैं वहाँ क्यों नहीं बैठा जहाँ से चाय बाँटी जानी शुरू होती है।

चाय मुझ तक आने तक इस अवधि में मैंने टॉयलट जाने का बहाना सोचा, बहाना इसलिए कि जाने की शारीरिक जरूरत नहीं थी, बस इस बहाने से थोड़ी चहलकदमी करके पीठ सीधी करनी थी। वापस आने पर जब चाय मिली तो चाय वाले ने गले में लटकती लड़ी में से नमकीन के जुड़े हुए पैकेट में से एक अलग करके पकड़ा दिया। मेरे हिस्से में पाँच रुपए वाली मूँग-दाल वाली नमकीन आई थी। भूख नहीं थी, न खाने का मन, न उस पाउच में पर्याप्त नमकीन दाल, लेकिन खाने का आशय इतना ही बस था कि इस बहाने से दो-चार मिनट काम रोका जाए।

मुझे चाय पीने की तो फिर भी खूब आदत है लेकिन यहाँ चाय नहीं, चाय पीने में लगने वाला अल्प समय, थके हुए शरीर और बोझिल मन को एक दो-मिनट का विश्राम देकर ईंधन भरने के फ्यूल के रूप में महसूस करना था।

ये केंद्र शाम पाँच बजे तक चलता था लेकिन कॉपी चेक करने वाले थोड़ा-थोड़ा करके चार बजे से जाने लग गए और उस केंद्र में व्यवस्था करने वाले कर्मचारीगण पाँच बजने से पहले हॉल के कुछेक कोनो की लाइट बंद करके बाकी बचे परीक्षकों को भी जाने का अपरोक्ष इशारा देने लगे। साढ़े चार के करीब मैं भी उठ खड़ा हुआ। जूट की रस्सी से बंधे हुए तीन बंडल बोरी में थे और खुले हुए बंडल की लगभग सौ में से पच्चीस-तीस कॉपी चेक हो पाई थी। जूट की रस्सी से खुले हुए उस बंडल को बाँधा पर वो उलझी हुई डोरी थी। बोरी में उस बंडल को रखकर बोरी के मुँह को बाँधने के लिए इधर-उधर जूट की रस्सी ढूँढने में परेशानी हुई क्योंकि सुबह तो इसके मुँह पर सिलाई थी।

घर आकर खाना खाकर लेटने पर ऐसा महसूस हुआ मानो सिर पर कोई पहाड़ लदा हुआ था और अब जाकर उतरा है लेकिन कल जाकर फिर धारण करना होगा। थोड़ी देर लेटकर मैंने एक पन्ना लिया और लिस्ट बनाई कि कल के युद्ध के लिए कौन कौनसे से हथियार-औजार लेकर जाने हैं। सबसे पहले एक रुई वाली गद्दी(कुर्सी पर बैठने के लिए), पानी की छोटी बोतल, दर्द की गोली, मोटा लिखने वाला लाल पेन, कटर, प्लास्टिक की डोरी, पेपर वेट और ये सब सामान ले जाने के लिए कपड़े का बड़ा थैला।

अगले दिन मैं दस बजे से पहले ही पहुँच गया, तब कि हॉल में कोई नहीं था। झाड़ू लगाने वाले भी मेरे बाद ही आए। झाड़ू लगता रहा और मैंने कुर्सी पर गद्दी रखकर और कॉपियों के खुले हुए बंडल पर पेपर वेट रखकर कॉपी चेक करनी शुरू कर दी। आज थोड़ा ठीक लग रहा था। थकावट, पीठ में दर्द महसूस होने पर मन को यही दिलासा देता कि बस बारह होने वाले हैं, फिर चाय आएगी तो दो-तीन मिनट रिलेक्स करेंगे।

पहले दिन की अपेक्षा दूसरे दिन चेक करने की गति बढ़ गई। अब बार-बार पेपर नहीं देखना पड़ रहा था कि किस प्रश्न के कितने पूर्णांक हैं। तीन बजे वाली चाय और मूँग-दाल के पाँच रूपये वाले पाउच का खासा इंतजार करता क्योंकि तब ब्रेक ही नहीं मिलता बल्कि ये भी लगता कि घंटे दो घंटे बाद अब घर जाने का टाइम हो जाएगा। जो विद्यार्थी पढ़ाई में कमजोर है उसकी कॉपी जल्दी चेक हो जाती क्योंकि पूरे प्रश्न ही नहीं होते और जो उत्तर लिखे होते वो भी बिल्कुल गलत। मेधावी विद्यार्थी की कॉपी भी जल्दी चेक हो जाती क्योंकि बिलकुल सही उत्तर होता और जल्द समझ में भी आ जाता।

औसत दर्जे वाले विद्यार्थी की कॉपी समय लेती थी क्योंकि राइटिंग खराब, उत्तर आधा सही और आधा गलत तो उत्तर के अंक देने में दुविधा, कोई-कोई उत्तर एक से अधिक बार लिखा दिया गया होता। हॉल में बीच-बीच में वही कटर, सुए, जूट की रस्सी, गोंद, व्हाइटनर आदि की माँग और आने-जाने वालों की बातचीत से डिस्टर्ब। वहाँ दो वर्दीधारी सुरक्षा-कार्मिकों की भी ड्यूटी थी। उनका बस काम इतना था कि परीक्षकों का बैग या कोई और सामान हो तो उसे हॉल के दरवाजे पर उतरवा देना।

मेरे हाथ में गद्दी का थैला होता था। मैं कटर, प्लास्टिक की रस्सी, पेपर वेट, तीन चार लाल पेन और उनका ड्राईंग बॉक्स ये सब साथ लेकर जाता इसलिए सुरक्षा-कर्मचारियों और उनके एतराज करने से पहले साढ़े नौ बजे ही पहुँच जाया करता। आने वालों में हॉल में प्रथम स्थान।

जब झाड़ू लगाने वाले आते तो पूरा हॉल धूल-मिट्टी से भर जाता। मैं मुँह पर रुमाल बाँधकर इस युद्धभूमि में डटा रहता। मेरे आने के बाद एक-एक करके बाकी परीक्षक आते, इंचार्ज साहब और उनके साथी आते। अब मेरी एकाग्रता बढ़ गई थी और कॉपी चेक करने की स्पीड भी। रोज जाते हुए हिसाब लगाता कि अब इतनी चेक हो गई और अब इतनी बाकी है।

मेरी गति बढ़ गई थी पर अब भी बाकी परीक्षकों से कम ही लगती थी। विद्यार्थियों के दिए हुए उत्तर और राइटिंग पढ़कर कभी इम्प्रेस हो जाता तो कभी हँसी आती। पर इतना जरूर है कि चूंकि ये बोर्ड कॉपियाँ थी इसलिए मुझे इनसे डर सा लगता कि मुझसे कोई गलती न हो जाए।

एक और परेशानी ये थी कि बोरी में चार बंडल थे। कोई बंडल चेक हो जाता तो नीचे वाले बंडल निकालने पड़ते और चेक हुआ बंडल खाली बोरी में नीचे रखना पड़ता। लोगों की बोरी बिल्कुल सीधी रहती थी, और खड़ी भी। मेरी बोरी में बंडल टेढ़े-मेढ़े रहते और बोरी को खड़ा करने पर सीधी खड़ी न रहकर जमीन पर गिर जाती। ऐसा अकसर होता रहता। पीठ में दर्द की वजह से झुकने में समस्या होती थी इसलिए खाली बोरी में बंडल डालना और भर जाने पर गिरी हुई बोरी को उठाना बहुत परेशानी का काम था क्योंकि बोरी का वजन बहुत होता था।

वर्दी वाले आकर मेरे थैले को बाहर रखने को कहते तो मैं उनको सबकुछ खोलकर दिखा देता कि गद्दी रखने का थैला है, बोतल है, पेपर वेट, प्लास्टिक वस्सी आदि सामान है। एक वर्दी वाला थोड़ा अक्खड़ था लेकिन दूसरा सज्जन। वो कहता ठीक है रख लो। अब मैं सुबह जल्दी आकर जाँच करने के लिए एक बंडल निकालकर बोरी में कॉपियों के बंडल के ऊपर मेरा निजी थैला भी रख देता और बोरी का मुँह आसपास पड़ी जूट की रस्सी से या मेरे पास वाली प्लास्टिक वाली रस्सी से हल्का सा बाँध देता ताकि उन सुरक्षा कर्मचारियों को मेरा निजी थैला दीखा खोलकर न दिखाना पड़े।

सप्ताह भर बाद कॉपी चेक करने की आदत सी हो गई यानि आना है, बोरी खोलनी है, फिर सफाईकर्मी आयेंगे, फिर चाय आएगी, फिर मैं टॉयलेट के बहाने थोड़ी चहलकदमी कर आऊँगा, फिर पाँच रुपए वाला मूँग दाल का पैकेट आएगा फिर दूसरे टर्म वाली चाय आएगी।

चाय वाला सीधा-सादा लड़का था। कुछ परीक्षक कहते कि हमें मधुमेह है तो फीकी चाय दे जाया कर तो वो सुबह-शाम की चाय में दोनों बार पहले फीकी चाय बाँटा करता। पहली फीकी और फिर मीठी, ऐसे चाय बाँटते-बाँटते उसे एक घंटा लग जाया करता। वो मुझे चाय देता तो जग से कप में चाय उड़ेलते-उड़ेलते मैं उससे थोड़ी बातचीत कर लेता। वो बीए सेकंड ईयर का छात्र था।

मैंने सोचा था कि अंतिम दिन उसे मेरी तरफ से सौ रुपए इनाम दे जाऊँगा क्योंकि उसकी वजह से या उसकी चाय की वजह से मुझे बहुत साहस, हौसला, संबल आदि मिला था। दसवें दिन तक मेरी लगभग सारी कॉपी चेक हो चुकी थी। मैं तो इस काम को ऐसे ले रहा था मानों एक युद्ध चल रहा हो और यहाँ से निकल जाऊँ तो विजय का जश्न मनाऊँ जबकि आसपास बैठे लोग कॉपियों के एक बोरी को निपटा कर दूसरी बोरी भी ले रहे थे।

पास बैठे सर बहुत विद्वान, अनुभवी और सरल स्वभाव के थे। उनसे लोग पेपर-वर्क पूछ जाते कि कॉपी चेक करने के बाद कौन-कौनसे कागज-प्रपत्र तैयार करने हैं। जब वो किसी को गाइड करते तो मैं कॉपी चेक करना छोड़ ध्यान से सबकुछ सुनता रहता।

कभी लगता कि समय खराब होगा तो काम करते-करते अभिमन्यु की तरह उनसे ज्ञान ग्रहण कर लेता। उनके दिए ज्ञान की वजह से ही मैं रात को पेपरवर्क पूरा करके ही अगले दिन सेंटर पहुँचा और उस दिन गद्दी नहीं ले गया था पर बोरी का मुँह सिलने के लिए मेरा निजी सूआ साथ लेकर गया था।

दस दिन तक मैं रोज देखता कि कोई न कोई बोरी का मुँह सिल रहा है और मैं सोचता कि मेरे नसीब में वो शानदार दिन कब आएगा। सूत्रे से बोरी सिलने के बाद मैंने उस बोरी से कहा कि तू रोज गुड़क जाती है, जा आज तेरी इच्छा पूरी कर ले और उसे हल्के हाथ से जमीन पर ऐसे लेटा दिया मानों किसी को काल-कवलित होने पर जमीदोज किया जा रहा हो।

अंदर केबिन से लाकर आगे से मुड़ी हुई कॉटी को बोरी में फँसाकर खींचा तो खींचने में बच्चेनुमा बड़ा आनन्द आया और बोरी को केबिन में जाकर छोड़ दिया। अभी केबिन में एकाध कर्मचारी आए थे और जिसको कागज-पत्र जमा करने थे वो मैडम आई नहीं थी।

अंदर केबिन से लाकर आगे से मुड़ी हुई कॉटी को बोरी में फँसाकर खींचा तो खींचने में बच्चेनुमा बड़ा आनन्द आया और बोरी को केबिन में जाकर छोड़ दिया। अभी केबिन में एकाध कर्मचारी आए थे और जिसको कागज-पत्र जमा करने थे वो मैडम आई नहीं थी।

ऐसा इसलिए कि यहाँ जो समय गुजरा वो पल-पल मेरे जेहन में डर, घबराहट, संशय, चिंता और फिर उन सबसे निपटने और विजयी हो जाने के कारण यादों के रूप में संचित हो गया था।

मुझे पता था कि थोड़े मिनटों बाद मैं यहाँ से मुक्त होने वाला हूँ लेकिन मैं यहाँ की गहरी यादों से कभी मुक्त नहीं हो पाऊँगा। मैडम को सारे प्रपत्र जमा करवाकर हॉल से गुजर रहा था तब पूरे हॉल को फिर से श्रद्धापूर्वक निहारा।

ऐसे लगा कि यहाँ में उतरों पर अंक बरसाती लाल पेन मुझ पर ही चल रही हो और कह रही हो कि तेरे जीवन की भी कॉपी चेक हो रही है। बोरियाँ मुझे कह रही हो कि एक बार हमें छूकर देख लो, हमने सीधा खड़ा रहना सीख लिया है।

हॉल मुझसे कह रहा हो कि रुक जाओ, चाय पीकर, मूँग-दाल वाली नमकीन खाकर जाना.. और मैं किसी को भी अनसुना न करके भी रुकना नहीं चाहता था।

अवतार सिंह अक्षरजीवी